ICQLY7

अध्याय **8**

fon'kk l 0;kikj vkj lid

(ईसा पूर्व 100 से 300 ईस्वी)

चित्र–8.1

एक दिन स्कूल लगने से पहले अंजली और राजू बाजार गए। किताब की दुकान से कापी खरीदकर बाहर आए तो उनकी शिक्षिका मिली। वे तीनों साथ–साथ शाला की ओर चल पड़े।

शिक्षिका ने उनसे पूछा, ''तुम दोनों के बैग तो बहुत अच्छे हैं। इन्हें कहां से खरीदा ?''

अंजली ने बताया– ''दीदी, इन्हें हमारे पिता जी ने रायपुर के किसी दुकान से खरीदा था।''

शिक्षिका ने बैग को ध्यान से देखा और कहा– ''देखो, इसमें बनानेवाली कंपनी का लेबल लगा है। अरे ! यह तो कोलकता से बनकर आया है।'' यह बात सुनकर अंजली और राजू को भी आश्चर्य हुआ। शिक्षिका ने दुकानों की ओर इशारा करके बताया, ''वो देखो कितनी सारी दुकानें हैं। यहाँ कितना सारा सामान बिकता है। यह सामान दूर–दराज़ के गाँव व शहरों में रहनेवाले लोग बनाते हैं और व्यापारी इन्हें यहाँ लाकर बेचते हैं।'' राजू ने पूछा– ''दीदी, क्या यहाँ विदेशों में बने सामान भी आते हैं।''

चित्र–8.2 हिंद यवन राजाओं के सिक्कें

शिक्षिका ने बताया, हाँ, यहाँ तो न सिर्फ अपने देश में बने सामान बिकते हैं बल्कि चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका और यूरोप में बने सामान भी बिकते हैं।

अंजली को इतिहास का पाठ याद आया तो उसने पूछा– ''क्या सम्राट अशोक के समय भी व्यापारी दूसरे देशों से व्यापार करते थे ?'' इतने में स्कूल आ गया और शिक्षिका ने कहा, ''चलो, इस बात पर हम कक्षा में सब के साथ चर्चा करेंगे।''

शिक्षिका बताने लगीं– अशोक के समय में अपने देश में बड़े–बड़े व्यापारी होते थे। उन्हें ''श्रेष्ठी'' या ''सेट्ठी'' कहा जाता था, इसी शब्द से ''सेठ'' शब्द बना है। ये लोग दूर–दूर तक जाकर वहाँ की चीजें खरीदकर लाते थे। उदाहरण के लिए दक्षिण प्रांतों से वे मोती, सोना, कीमती पत्थर, चंदन, इमारती लकड़ी, जानवरों की खाल आदि लाते थे और वहाँ वे सुंदर

अब आप ही सोचकर बताइए उन दिनों न तो रेलगाड़ी थी न मोटरगाड़ी, फिर सामान एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाते होंगे ?

उन दिनों कई व्यापारी एक–साथ व्यापार करने जाते थे। उनके साथ उनके गाड़ी–बैल,गधे, घोड़े, ऊँट सब पर सामान लदे होते थे। गाँव या जंगलों से जब वे गुजरते थे तो वे दिन में चलते और रात को पड़ाव डालकर रुक जाते थे। इसके विपरीत रेगिस्तानों को पार करते समय वे दिन में आराम करते और रात को चलते थे। रास्ते में उन्हें बाढ़, तूफान, डाकू आदि खतरों से बचकर चलना पड़ता था। रास्ते में सराय या बौद्ध भिक्षुओं के मठ भी होते थे जिनमें वे ठहरते थे। इस प्रकार वे किसी शहर के बाजार में जाकर अपना सामान बेचते थे और वहाँ की सस्ती व अच्छी चीज़ें खरीद लेते थे। कुछ अन्य व्यापारी जहाज़ों से समुद्री–यात्रा करके इंडोनेशिया, चीन, अरब, ईरान, अफ्रीका आदि देशों में पहुँचते थे।''

''उन दिनों भी धनी लोग दूर दराज़ की चीजें ऊँची कीमतों में खरीदते थे। इस कारण सेट्ठियों को बहुत मुनाफा होता था। इन पैसों से वे अपने लिए आरामदेह घर बनवाते थे। साथ ही वे देवताओं के लिए मंदिर बनवाते थे। वे बौद्ध–स्तूपों व मठों को दान भी देते थे।''

अंजली ने शिक्षिका से पुनः सवाल किया– ''दीदी, क्या अशोक के समय के बाद भी यहाँ के व्यापारी दूसरे देशों से व्यापार करते थे ?''

शिक्षिका ने जवाब दिया, ''हाँ! राजा अशोक के समय के बाद भी यह व्यापार होता था। उसके बाद विदेशों से व्यापार और तेजी से बढ़ता गया। आप लोगों ने पिछले पाठ में पढ़ा है कि कैसे यूनान व ईरान के राजाओं ने भारत के उत्तर–पश्चिम में अपना राज्य बनाया था। उनके दूत व व्यापारी भारत आने लगे और भारतीय व्यापारी भी वहाँ जाने लगे।''

''जब मौर्य–साम्राज्य का अंत हुआ तो उसकी जगह शुंग–वंश के राजा मगध पर शासन करने लगे और दक्षिण में सातवाहन–राजवंश आया। इस बीच कई यूनानी राजाओं ने भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग में अपना राज्य बनाया। इनमें सबसे प्रमुख राजवंश थे–शक और कुशाण। कुशाण–वंश का प्रमुख राजा कनिष्क था। इसका राज्य मध्य–एशिया के आमू दरिया से लेकर भारत के मथुरा तक फैला था। उसके बाद मध्य–एशिया के सूखे इलाकों से आए कबीलों के राजाओं ने उत्तर–पश्चिम में अपना राज्य बनाया। उनका राज्य काफी विशाल था जिसमें भारत, अफगानिस्तान, ईरान, उजबेकिस्तान आदि देशों के हिस्से थे। इस कारण भी भारत और इन देशों के बीच व्यापार बढ़ा। भारतीय व्यापारी इन सब देशों में बेरोक टोक आ–जा सकते थे। भिक्षुओं व श्रमणों ने वहाँ अपने मठ भी स्थापित किए थे।''

''चीन से मध्य–एशिया होते हुए भूमध्य सागर तक एक रास्ता जाता था। उस रास्ते से चीन के रेशम का व्यापार होता था। इसलिए इसको रेशमी (रेशम) मार्ग या "सिल्क रूट" कहते थे। इस रास्ते में भारतीय व्यापारियो के ठिकानों व बौद्ध–बिहारों के अवशेष मिले हैं। इससे पता चलता है कि यहां के लोग व्यापार व धर्म–प्रचार के लिए दूर–दूर तक जाते थे।''

''लेकिन भारतीय व्यापारी यहीं नहीं रुके। वे और पश्चिम में मिस्र के सिकंदरिया, यूनान और रोम तक गए। आमतौर पर भारतीय व्यापारी समुद्री मार्ग से अपना सामान सिकंदरिया ले जाते थे, जहाँ से मिस्र और यूरोप के व्यापारी उन्हें अपने–अपने देश ले जाते थे।''

मानचित्र 8.1 में रेशमी मार्ग, सिकंदरिया, यूनान, ईरान और इराक को पहचानिए और चर्चा कीजिए ।

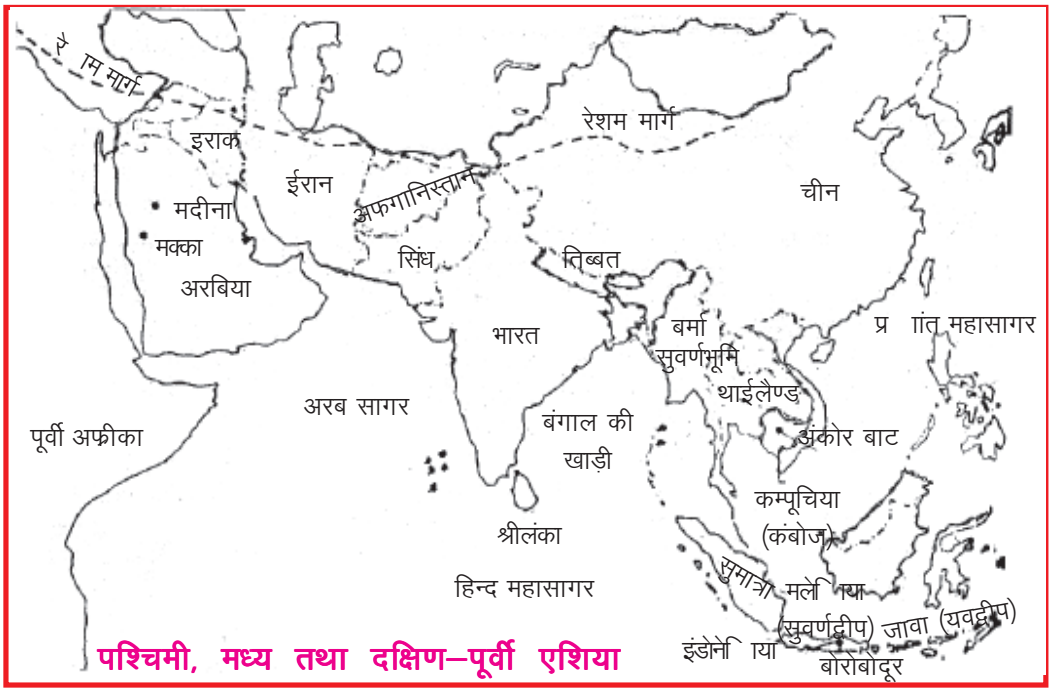

ekufp= 8-1

कई बच्चों ने पूछा – "भारतीय व्यापारी उन देशों में क्या–क्या बेचते थे और उनसे क्या–क्या खरीदते थे ?"

शिक्षिका ने जवाब दिया –''हमारे देश में तरह–तरह के मसाले होते हैं, जैसे – कालीमिर्च, इलायची, दालचीनी आदि। ये यूरोप में नहीं होते थे । लेकिन वहाँ के भोजन में इनका काफी उपयोग था। भारतीय व्यापारी इन्हें वहाँ ले जाते थे। इसके अलावा हमारे देश के सुंदर कपड़े, चंदन, कीमती पत्थरों के आभूषण, हाथी, मोर, बंदर इत्यादि की उन देशों में बड़ी माँग थी। इन चीजों के बदले वहाँ से सोना, मूँगा, आदि भारत मँगवाया जाता था।''

पता कीजिए आजकल हमारे देश से बाहर क्या–क्या बिकने जाता है ?

अब राजू ने एक सवाल किया – "क्या उन देशों के व्यापारी भी भारत आते थे ?"

शिक्षिका ने समझाया –हाँ, भारत में कई जगह रोम के व्यापारियों की बस्तियाँ थीं। इनमें वे आकर रहते थे और व्यापार करते थे। जैसे यूनान, ईरान व मध्य–एशिया के लोगों ने भारत में राज्य बनाया, वैसे ही कई भारतीयों ने भी दक्षिण–पूर्वी एशिया के श्रीलंका, मलेशिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया आदि देशों में राज्य बनाया।

विदेशों से संपर्क का प्रभाव

आपने पिछले अंश में पढ़ा कि भारत के लोगों का दूसरे देशों के लोगो से कई तरह से संपर्क हुआ जैसे, एक–दूसरे के यहाँ राज्य स्थापित करके, व्यापार करके, धर्म प्रचार द्वारा आदि। इसी प्रकार यूनान व मध्य–एशिया के कई लोग भारत आकर बस गए। कई भारतीय भी दूसरे देशों में जाकर बस गए। इन सब बातों का लोगों के रहन–सहन व सोच–विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। ये प्रभाव क्या थे, इनके बारे में जानें–

सिक्के

चित्र–8.3 कनिष्क के सिक्कों की बनावट

व्यापार में सोने–चाँदी के सिक्कों का बहुत महत्व था। अजातशत्रु और अशोक के समय के सिक्के चाँदी या ताँबे के टुकड़ों पर एक तरह के निशानों ठप्पा (आहत) लगाकर बनाए जाते थे।

जबकि हिंद–यूनानी राजाओं के सिक्के साँचों में ढलते थे। इनमें राजा की तस्वीर और उसका नाम लिखा होता था। इनके प्रभाव में आकर भारतीय राजा भी इसी तरह के सिक्के ढालने लगे।

यहाँ दिए गए सिक्कों को पहचानिए कौन–से पुराने ठप्पेवाले सिक्के हैं और कौन–से ढाले गए सिक्के हैं? आजकल के सिक्कों के बारे मे अनुमान लगाइए।

मूर्तिकला

उन दिनों गांधार और मथुरा में मूर्तिकला का काफी विकास हुआ। गांधार भारत के उत्तर–पश्चिम में है। यह हिस्सा यूनानी व कुषाण–साम्राज्य में था। इस कारण यहाँ भारतीय और यूनानी कला का मेल–मिलाप हुआ। गांधार में बनी मूर्तियों में हम यूनानी मूर्तिकला के प्रभाव को देख सकते हैं। इन मूर्तियों में चुन्नटों की बनावट पर जोर है।

लेकिन मथुरा में बनी मूर्तियों में ये प्रभाव नहीं दिखता। मथुरा के कलाकार मूर्तियों की हृष्ट–पुष्ट आकृति पर ज्यादा जोर देते हैं और चुन्नटों पर कम। इन्हें आप चित्र 8.4 एवं 8.5 के बीच तुलना करके भी समझ सकते हैं।

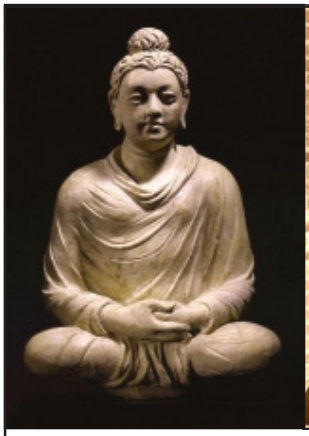

चित्र–8.4. बुद्ध गांधार शैली

चित्र–8.5. महावीर स्वामी मथुरा शैली

धर्म और दर्शन

रोमन–साम्राज्य और यूनान से संपर्क के कारण गणित, ज्योतिष और खगोलशास्त्र की जानकारियों का आदान–प्रदान हुआ। इन विषयों से संबंधित यूनानी–ग्रंथों का अनुवाद संस्कृत में हुआ। हफ्ते के सात दिन, बारह–राशियाँ आदि बातें भारतीय विद्वानों ने उनसे अपनाया। जबकि उन्होंने शून्य, दशमलव–चिह्न आदि हमसे अपनाया।

यूनानी यात्रियों ने भारतीय धर्म व दर्शन की जानकारियाँ अपने भूगोल और इतिहास की किताबों में लिखा। भारत से जो बौद्ध–भिक्षु व श्रमण उन दिनों चीन, मध्य–एशिया व दक्षिण–पूर्वी एशिया गए थे। उन्होंने वहाँ के लोगों की सोच (दर्शन) और धर्म पर गहरा प्रभाव डाला। दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशो में भी भारतीय मंदिरो की तरह भव्य मंदिरो का निर्माण हुआ, जैसे–कंबोडिया में 'अंकोरवाट मंदिर'। जावा में 'बोरोबोदूर' आज भी उस क्षेत्र का सबसे बड़ा बौद्ध मंदिर है। इसी प्रकार इंडोनेशिया में रामायण की कथा बहुत लोकप्रिय है।

इन्हीं दिनों भारत में चिकित्सा–शास्त्र काफी विकसित हुआ। इस पर दो विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ–"चरक–संहिता" और "सुश्रुत–संहिता" लिखे गए। इस प्रकार यह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण काल था।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) fn, x, 'kCnk d: }kjk [kkyh LFkkuk dh ifr: dhft,&

(सांचे / लेबल / चिकित्सा / गांधार)

1. सुश्रुत संहिता में ——— की जानकारी है।
2. सिक्के ——— में ढ़लते थे।
3. भारत के उत्तर पश्चिम में ——— है।
4. सामान बनानेवाली कंपनी पहचान के लिए ——— लगाते हैं।

ID9E2H

(ब) ,d&,d okD; e: mÙkj fyf[k,&

1. भारतीय व्यापारी किस मार्ग से अपना माल सिकंदरिया ले जाते थे?
2. कुषाण वंश के प्रमुख राजा का नाम बताइए।
3. भारतीयों का व्यापारिक संबंध किन–किन देशों से अधिक था?
4. भारत में पैदा होनेवाले मसालों के नाम बताइए।

(स) bu i'uk d: mÙkj nhft,&

1. रेशमी मार्ग किसे कहते हैं ?
2. व्यापारी व्यापार के अलावा और क्या–क्या कार्य करते थे।
3. उन दिनों विदेशों में किन–किन चीजों की अधिक माँग थी।
4. गांधार शैली की मूर्तियों की विशेषताएँ बताइए।
5. दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशो में भारतीय धर्म और दर्शन के प्रभाव का उदाहरण बताइए।
6. सिक्के क्यों बनाए गए थे ?
7. व्यापारियों को सेट्ठी क्यों कहा जाता था ?

(द) ;kX;rk foLrkj &

अपने राज्य के मुख्य संग्रहालय में स्थित बौद्ध मूर्तियों का अवलोकन कीजिए तथा उनकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।